अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) देशबंध-सर्वबंध का थोकड़ा किस आगम से लिया गया-
(क) प्रज्ञापना (ख) भगवती सूत्र
(ग) आचारांग सूत्र (घ) स्थानांग सूत्र (ख)

(ii) आहारक शरीर के सर्वबंध की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) एक समय (ख) दो समय
(ग) एक मुहूर्त (घ) अन्तमुहूर्त (क)

(iii) वैक्रिय शरीर के सर्वबंध और देशबंध का उत्कृष्ट अंतर समुच्चय जीव की अपेक्षा है-
(क) एक समय (ख) अनन्तकाल
(ग) अन्तर्मुहूर्त (घ) करोड़पूर्व (ख)

(iv) निर्ग्रन्थ के प्रकार होते हैं-
(क) 2 (ख) 5
(ग) 4 (घ) 3 (घ)

(v) स्नातक निर्ग्रन्थ होते हैं-
(क) 3 वेद वाले (ख) 2 वेद वाले
(ग) 1 वेद वाले (घ) अवेदी (घ)

(vi) निर्ग्रन्थ कितने कर्मों का बंध करता है-
(क) 7 (ख) 8
(ग) 6 (घ) 1 साता वेदनीय (घ)

(vii) निर्ग्रन्थ में समुद्घात पाये जाते हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 1 (घ) कोई समुद्घात नहीं (घ)

(viii) पाँचों निर्ग्रन्थ में सबसे थोड़े होते हैं-
(क) पुलाक (ख) स्नातक
(ग) बकुश (घ) निर्ग्रन्थ (घ)

(ix) संजया का थोकड़ा भगवती सूत्र के किस शतक से लिया गया है-
(क) 20वें (ख) 22वें
(ग) 24वें (घ) 25वें (घ)

(x) इत्वरकालिक सामायिक चारित्र का जघन्य काल है-
(क) 7 दिन (ख) 1 माह
(ग) 4 माह (घ) 6 माह (क)

(xi) परिहार विशुद्धि चारित्र की आराधना एक साथ कितने साधु करते हैं-
(क) 6 साधु (ख) 3 साधु
(ग) 9 साधु (घ) 1 साधु (ग)

(xii) कौन सा संयत अनाहारक भी होता है-
(क) यथाख्यात संयत (ख) परिहार विशुद्धि
(ग) सामायिक संयत (घ) सूक्ष्म संपराय संयत (क)

(xiii) नाम कर्म किस गुणस्थान तक वेदते हैं-
(क) 9वें (ख) 10वें
(ग) 12वें (घ) 14वें (घ)

(xiv) पदवी का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) पन्नवना (ख) भगवती
(ग) ठाणांग (घ) नन्दी सूत्र (क)

(xv) एकेन्द्रिय रत्नों की संख्या है-
(क) 14 (ख) 7
(ग) 9 (घ) 23 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(i) एक मुहूर्त में 167, 77,216 आवलिकाएँ होती हैं। (हाँ)
(ii) औदारिक शरीर के देशबंधक का उत्कृष्ट अन्तर 33 सागरोपम और 3 समय होता है। (हाँ)
(iii) तैजस कार्मण शरीर का अन्तर एक समय होता है। (नहीं)
(iv) उद्देशकों के समूह को शतक कहते हैं। (हाँ)
(v) पुलाकादि पाँच नियंठा सरागी होते हैं। (नहीं)
(vi) बकुश मूलगुण एवं उत्तर गुण के प्रतिसेवी होते हैं। (नहीं)
(vii) पुलाक 6 कर्म की उदीरणा करता है। (हाँ)
(viii) पुलाकादि पाँच नियंठा लोक के असंख्यातवें भाग में होते हैं। (हाँ)
(ix) संयम का पालन करने वाले को संयत कहते हैं। (हाँ)
(x) यथाख्यात संयत वीतरागी होते हैं। (हाँ)
(xi) सूक्ष्म संपराय संयत में साकार अनाकार दोनों उपयोग होते हैं। (नहीं)
(xii) सामायिक आदि चार संयत नियमा आठ कर्मों को वेदते हैं। (हाँ)
(xiii) छेदोपस्थापनीय संयतपना एक भव में उत्कृष्ट 900 बार आता है। (नहीं)
(xiv) चौदहवाँ गुणस्थान शाश्वत है। (नहीं)
(xv) मनुष्य में 14 पदवी पावे। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(i)	विग्रह गति में देशबंध	(क) चितकबरा	तैजस कार्मण शरीर
(ii)	वैक्रिय शरीर के देशबंध सर्वबंध का उत्कृष्ट अंतर	(ख) समान काल	अनंत काल
(iii)	बकुश	(ग) नो संज्ञा	चितकबरा
(iv)	अकर्मांश स्नातक	(घ) अप्रतिसेवी	घाती कर्मों से रहित
(v)	पलिभाग	(च) 14वें गुणस्थान तक	समान काल
(vi)	स्नातक	(छ) अनंत काल	अप्रतिसेवी/नो संज्ञा
(vii)	परिहार विशुद्धि संयत	(ज) घाती कर्मों से रहित	अप्रतिसेवी/नो संज्ञा
(viii)	असंयोगी	(झ) तैजस कार्मण शरीर	जिसमें अशाश्वत का संयोग ही न हो
(ix)	आयु कर्म का वेदन	(य) चार हाथ लम्बा	14वें गुणस्थान तक
(x)	दण्ड रत्न	(र) जिसमें अशाश्वत का संयोग ही न हो	चार हाथ लम्बा

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(i) हम शरीर है, हमारा अन्तर नहीं होता है। तैजस कार्मण
(ii) मैं एक शरीर हूँ, मेरे प्रयोग बंध के अधिकारी केवल मनुष्य ही है। आहारक
(iii) मैं एक निर्ग्रन्थ हूँ, मुझमें गुण थोड़े और दुर्गुण अधिक होते हैं। पुलाक
(iv) हम कल्पातीत निर्ग्रन्थ हैं। निर्ग्रन्थ/स्नातक
(v) मैं एक निर्ग्रन्थ हूँ जो केवल मोक्ष में ही जाता है। स्नातक
(vi) मैं एक निर्ग्रन्थ हूँ जो 6 कर्मों की ही उदीरणा करता हूँ। पुलाक
(vii) मैं एक नियंठा हूँ जो क्षायिक भाव में रहता हूँ। स्नातक
(viii) मैं केवलज्ञानी होने से श्रुत ज्ञान की सीमा से परे होता हूँ। स्नातक
(ix) मुझमें संज्वलन लोभ कषाय का सूक्ष्म उदय ही रहता है। सूक्ष्म सम्पराय संयत
(x) हम ऐसे निर्ग्रन्थ हैं जो तीर्थ में ही होते हैं। पुलाक, बकुश, प्रतिसेवना कुशील
(xi) मैं संयत हूँ जो द्रव्य तथा भाव की अपेक्षा स्वलिंग में ही होता हूँ। परिहार विशुद्धि संयत
(xii) मैं संयत हूँ, मेरा संहरण नहीं हो सकता है। परिहार विशुद्धि संयत
(xiii) मैं संयत हूँ मुझमें मोहनीय कर्म का लेशमात्र भी उदय नहीं रहता है। यथाख्यात संयत
(xiv) मैं एक कर्म हूँ, मेरा बंध जीवन में एक बार होता है। आयुकर्म
(xv) मैं विद्याधरों की उत्तर की श्रेणी में उत्पन्न होती हूँ। श्रीदेवी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) क्षुल्लक भव किसे कहते हैं ?
सबसे छोटे भव (256 आवलिका प्रमाण) को क्षुल्लक भव कहते हैं।

(ii) आहारक शरीर के सर्वबंध एवं देशबंध की जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।
सर्वबन्ध- जघन्य- 1 समय उत्कृष्ट- 1 समय
देशबन्ध- जघन्य- अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट- अन्तर्मुहूर्त

(iii) दर्शन पुलाक किसे कहते हैं ?
दर्शन पुलाक- शंका आदि दर्शन के अतिचारों का सेवन कर सम्यक्त्व को दूषित करने वाला।

(iv) बकुश में कौन-कौन से कल्प पाये जाते हैं ?
चार- स्थित, अस्थित, स्थविर और जिनकल्प।

(v) नो संज्ञा से क्या तात्पर्य है ?
जो आहारादि का उपयोग करते हुए भी उनकी आसक्ति से रहित होते हैं, वे 'नो संज्ञा' वाले कहलाते हैं।

(vi) सामायिक संयत की जघन्य व उत्कृष्ट गति लिखिए।
जघन्य- पहला देवलोक उत्कृष्ट- अनुत्तर विमान।

(vii) सबसे थोड़े और सबसे अधिक कौन से संयत होते हैं ?
सबसे थोड़े- सूक्ष्म सम्पराय संयत
सबसे अधिक- सामायिक संयत- संख्यात गुणा।

(viii) ज्ञानावरणीय कर्म वेदते हुए कितने कर्म वेदते हैं ?
7 या 8 कर्म वेदते हैं।

(ix) चक्ररत्न कहाँ उत्पन्न होता है ?
चक्रवर्ती की आयुधशाला में।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) औदारिक शरीरी समुच्चय जीव का देशबंध-सर्वबंध का अन्तर लिखिए।

बोल	जघन्य	उत्कृष्ट
सर्वबन्ध	1 क्षुल्लक भव में 3 समय कम	33 सागरोपम+करोड़ पूर्व+ 1 समय
देशबन्ध	1 समय	33 सागरोपम+3 समय

(ii) आहारक शरीर के देशबंधक आदि का अल्प बहुत्व लिखिए।
अल्प बहुत्व- सबसे थोड़े आहारक शरीर के सर्वबन्धक, उससे देश बन्धक संख्यात गुणा, उससे अबन्धक अनन्त गुणा।

(iii) अन्तर किसे कहते हैं ? अनेक जीवों की अपेक्षा पुलाक का अन्तर लिखिए।
अन्तर- एक पर्याय (अवस्था) को प्राप्त करने के बाद उसका त्याग करके पुनः उसी पर्याय को जितने समय में प्राप्त कर लेते हैं, उसे 'अन्तर' कहते हैं।
पुलाक का अन्तर- पुलाक का अनेक जीवों की अपेक्षा अन्तर जघन्य एक समय, उत्कृष्ट संख्यात वर्षों का बतलाया है।

(iv) स्नातक निर्ग्रन्थ की एक जीव की अपेक्षा और अनेक जीवों की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति काल द्वार के आधार पर लिखिए।

	एक जीव की अपेक्षा		अनेक जीवों की अपेक्षा
स्नातक	अन्तर्मुहूर्त	देशोन क्रोड़ पूर्व वर्ष	सदाकाल शाश्वत

(v) निर्ग्रन्थपना उत्कृष्ट तीन भवों में किस प्रकार प्राप्त होता है ?
11वाँ गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना दो भवों में प्राप्त हो सकता है।
12वाँ गुणस्थानवर्ती निर्ग्रन्थपना एक भव में प्राप्त होता है। इस प्रकार से अधिकतम तीन भवों में ही निर्ग्रन्थपना प्राप्त होता है।

(vi) यथाख्यात संयत का संहरण किस अपेक्षा से माना जाता है ?
कोई छठे गुणस्थानवर्ती सामायिक, छेदोपस्थापनीय संयत का कोई देवादि संहरण कर ले, वहाँ जाकर उस संयत के परिणामों की विशुद्धि बढ़ती रहे तो वह संहरण क्षेत्र में ही सूक्ष्म सम्पराय और यथासंख्यात संयतपने को प्राप्त कर सकते है, इसी अपेक्षा से सूक्ष्म सम्पराय और यथासंख्यात का संहरण माना जाता है।

(vii) परिहार विशुद्धि संयत द्रव्य तथा भाव दोनों से स्वलिंग में ही क्यों होते हैं ?
परिहार विशुद्धि चारित्र वाले जहाँ विचर रहे हों, वहाँ राजा यदि कुपित हो जाय तो मारने से अधिक क्या करेगा, ऐसा सोचकर वे संयत संथारा कर लेते हैं अथवा कुपित होने पर राजा द्वारा जो समय-सीमा दी गई हो, उसमें विहार कर जाते हैं, किन्तु वे लिंग नहीं बदलते हैं, इसलिए द्रव्य की अपेक्षा भी परिहार विशुद्धि चारित्र को स्वलिंग (जैन साधु का वेश) में ही मानते हैं।

(viii) पाँच स्थावरों में कर्म-बन्ध की अपेक्षा भंग क्यों नहीं बनते हैं ?
एकेन्द्रिय में निरन्तर 7-8 कर्म बांधने वाले होते ही हैं इसलिए उन्हें शाश्वत माना है क्योंकि पाँच स्थावरों में एक ना एक जीव तो निरन्तर आयु बांधता ही है।

(ix) चक्ररत्न का कार्य लिखिए।
सेना के आगे-आगे आकाश में 'गरणाट' शब्द करता हुआ चलता है और छह खण्ड़ साधने का रास्ता बतलाता है। चक्रवर्ती की इच्छानुसार जहाँ चक्ररत्न ठहरता है, वहीं सेना का पड़ाव होता है।